ब्राह्मणों की नेचर विशेषता की नेचर है – इसे नेचरल स्मृति-स्वरूप बनाओ

25-1-94

भाग-। की श्रेष्ठ रेखा खींचने का क़लम देने वाले भाग-। विधाता बाप, भाग-ावान विशेष आत्माओं प्रति बोले –

आज बापदादा अपने सर्व विश्व की विशेष आत्माओं को देख रहे हैं। ड्रामानुसार आप आत्माओं का कितना विशेष पार्ट नूँधा हुआ है। आज बापदादा हर एक बच्चे की विशेषताओं को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चे को देख 'वाह बच्चे' -ह स्नेह का गीत दिल में बज रहा था। साथ-साथ -ह भी देख रहे थे कि बच्चों के दिल से -े 'वाह-वाह' का गीत सदा निकलता है? हर कर्म में, हर क़दम में, हर संकल्प में -े श्रेष्ठ अनुभव होता है वा कभी-कभी होता है? साधारण जीवन से विशेष जीवन सदा स्वत: रहती है वा स्मृति लाने से अनुभव होता है? जब जीवन है तो जीवन का अर्थ ही है सदा और स्वत: रहे। स्मृति में ला-ा तो अनुभव कि-ा और स्मृति में नहीं ला-ा तो विशेषता के बजा-। साधारण जीवन अनुभव हो–-ह आप विशेष आत्माओं की विशेषता नहीं है। ब्राह्मण जन्म ही विशेष जन्म है। जिसका जन्म ही विशेष है उसका जीवन क-ा होगा? विशेष होगा -ा साधारण? ब्राह्मण जन्म भी श्रेष्ठ, ब्राह्मण धर्म भी श्रेष्ठ और ब्राह्मण कर्म भी श्रेष्ठ। क-ोंकि ब्राह्मण जन्म दाता, ब्राह्मण धर्म स्थापक, सर्वश्रेष्ठ परम आत्मा और आदि आत्मा ब्रह्मा बाप है। तो जैसे रचता सर्वश्रेष्ठ तो रचना भी सर्वश्रेष्ठ अर्थात् विशेष है। ब्राह्मणों का कर्म विशेष क-ों है? क-ोंकि कर्म में फ़ालो करने के लिए आप सबके सामने आदि आत्मा ब्रह्मा बाप सेम्पल है। कर्म में फ़ालो साकार ब्रह्मा बाप को करते हो। इसलि-े भाग-। विधाता अर्थात् कर्म द्वारा भाग-। की रेखा श्रेष्ठ बनाने वाला ब्रह्मा गा-ा हुआ है। भाग-। की रेखा का कलम कर्म है। तो श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल ब्रह्मा बाप है। इसलि-े आप सभी विशेष पुरुषार्थ का शब्द -ही वर्णन करते हो कि बाप समान बनना है।

इस अव्-ाक्त वर्ष में सभी का लक्ष्-। क-ा रहा? निराकारी स्थिति में निराकार बाप समान अशरीरी स्थिति का अनुभव कि-ा? साकार कर्म में ब्रह्मा बाप समान

बनने का नम्बरवार अनुभव कि-ाा? तो विशेष जीवन का आधार विशेष जन्म, धर्म और श्रेष्ठ कर्म है। जैसे लौकिक जीवन में भी अगर किसी आत्मा का जन्म विशेष राज परिवार में हो, राजकुमार हो वा राजकुमारी हो तो -ाह विशेषता जन्म की होने के कारण हर सम-ा सदा और स्वत: रहती है वा बार-बार स्मृति में लाते हैं कि मैं राजकुमारी हूँ? सहज -ााद होती है ना। पुरुषार्थ करते हैं क-ाा? चाहे कर्म अपनी रुचि के कारण कितना भी साधारण हो लेकिन अपने जन्म की विशेषता भूल जाते हैं क-ाा? नेचरल और नेचर बन जाती है। तो आप ब्राह्मण आत्माओं की नेचर क-ाा है? विशेष है -ाा साधारण है? अभी भी कोई-कोई बच्चे जब कोई साधारण कर्म कर लेते हैं तो बापदादा के आगे अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लि-ो क-ाा कहते हैं? मैं चाहता नहीं था वा चाहती नहीं थी कि -ो कर्म करूँ लेकिन मेरी नेचर है इसलि-ो हो ग-ाा। वैसे -ो कहना वा सोचना -ाथार्थ है? मैं कौन? ब्राह्मण जीवन वाले हैं ना। तो ब्राह्मण जीवन वाली आत्मा -ो सोच सकती है कि -ो मेरी नेचर है? -ाह कहना राइट है? तो उस सम-ा क-ाों बोलते हैं? उस सम-ा ब्राह्मण नहीं बोलता, मा-ाा बोलती है। तो जैसे -ो साधारण नेचर वा मा-ाावी नेचर नेचरल काम कर लेती है ना, इसलि-ो कहते हैं चाहते नहीं थे लेकिन हो ग-ाा। तो ब्राह्मण नेचर अर्थात् विशेषता की नेचर भी नेचरल होनी चाहि-ो। नेचरल चीज़ सदा रह सकती है। तो विशेष जीवन की स्मृति नेचर के रूप में नेचरल होनी चाहि-ो वा कभी भूलना, कभी -ााद होना? तो सदा स्मृति स्वरूप में रहो। स्मृति लाने वाले नहीं, स्मृति स्वरूप। इसलि-ो बापदादा देख रहे थे–अव-ाक्त वर्ष सम-ा प्रमाण समाप्त हुआ, लेकिन बापदादा समान स्व-ां को सम्पन्न बना-ाा? इस अव-ाक्त वर्ष का विशेष लक्ष-ा रखा कि अव-ाक्त अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप बनना और बनाना है। सभी ने -ाही लक्ष-ा रखा था ना, फिर रिज़ल्ट क-ाा निकली? अपने आपको चेक कि-ाा? 'फ़रिश्ता भव' का वरदान भी वरदाता से मिला तो वरदान और लक्ष-ा–दोनों की स्मृति से कहाँ तक सफ़लता अनुभव की है, -ो सूक्ष्म चेकिंग स्व-ां की की वा -ो सोचा कि अव-ाक्त वर्ष पूरा हुआ, -ाथाशक्ति जितना भी अनुभव कि-ाा उतना ही ड्रामानुसार ठीक रहा? वर्ष परिवर्तन के साथ-साथ स्व परिवर्तन की गति क-ाा रही–इस विधि से चेक कि-ाा? जैसे वर्ष समाप्त हुआ वैसे स्व-ां लक्ष-ा और लक्षण में सम्पन्न बने वा -ो सोचते हो कि इस वर्ष में और बन जा-ोंगे? सम-ा

और स्व-ां की गति समान रही? वैसे तो सम-ा से भी स्व-ां की गति तीव्र होनी है क्-ोंकि समाप्ति के सम-ा को लाने वाली आप विशेष आत्मा-ों निमित्त हो। तीव्र गति से वर्ष तो सम्पन्न हो ग-ाा। मालूम हुआ वर्ष कैसे पूरा हो ग-ाा? तो चेक करो–मुझ विशेष आत्मा की परिवर्तन की गति तीव्र रही वा कभी तीव्र, कभी मध्-ाम रही?

फ़रिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संस्कार और संसार से रिश्ता नहीं। तो चेक करो–पुराने संसार की कोई भी आकर्षण, चाहे सम्बन्ध रूप में, चाहे अपने देह की तरफ़ आकर्षण वा किसी देहधारी व्-ाक्ति के तरफ़ आकर्षण, कोई वस्तु की तरफ़ आकर्षण कितने परसेन्ट में रही? ऐसे ही पुराने संस्कार की आकर्षण, चाहे संकल्प रूप में, वृत्ति के रूप में, वाणी के रूप में, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म के रूप में कितनी परसेन्ट रही? फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। तो निजी लाइट स्वरूप स्मृति स्वरूप में कहाँ तक रहा? साथ-साथ लाइट अर्थात् हल्कापन, स्व के परिवर्तन के पुरुषार्थ में कहाँ तक लाइट अर्थात् हल्के रहे? मन अर्थात् संकल्प शक्ति में व्-ार्थ को समर्थ में परिवर्तन करने में अर्थात् व्-ार्थ के बोझ को हल्का करने में कहाँ तक सफ़ल रहे? इसी प्रकार व्-ार्थ सम-ा, व्-ार्थ संग, व्-ार्थ वातावरण–इस सबमें कहाँ तक परिवर्तन करने में हल्के रहे? ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध में, सेवा के सम्बन्ध में कहाँ तक हल्के रहे? इसको कहा जाता है फ़रिश्तापन के तीव्र गति की स्थिति। इस विधि से चेक करो और भविष्-ा के लि-ो चेन्ज अर्थात् परिवर्तन करो। अपने ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचरल नेचर बनाना–इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक विशेष आत्मा हूँ–इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे। क्-ोंकि स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जाते हैं। वर्ष तो पूरा हुआ। बापदादा रिज़ल्ट तो देखेंगे ना। तो रिज़ल्ट में -ाथाशक्ति मैजारिटी हैं और सदा शक्तिशाली, -ाथाशक्ति के मैजारिटी में मैनारिटी हैं।

स्मृति दिवस भी बहुत स्नेह से मना-ाा। अब विशेष जैसे स्नेह से मना-ाा, वैसे स्नेह का सबूत बाप समान स्मृति स्वरूप बनना ही है। सुना रिज़ल्ट? आगे क्-ाा करना है? -ाथाशक्ति -ाा सदा शक्ति स्वरूप? तो देखेंगे इस वर्ष में मैजारिटी सदा शक्तिशाली का सबूत कहाँ तक देते हैं? टीचर्स क्-ाा समझती हो?

किस लाइन में आ-ोंगे? सदा शक्तिशाली! सबका टी.वी.में फोटो निकल रहा है। क-ाा भी हो जा-ो, कैसी भी परिस्थिति बन जा-ो लेकिन सदा शक्तिशाली। नाम नोट होते हैं ना कौन-कौन किस ग्रुप में आ-ो? अभी टीचर्स का सम्मेलन होने वाला है ना। तब तक की रिज़ल्ट सभी टीचर्स की क-ाा होगी? जिसको करना होता है वो कब को नहीं सोचता है। दृढ़ संकल्प का अर्थ है अब। साधारण संकल्प का अर्थ है कब हो जा-ोगा! तो 'कब' वाले हो -ाा 'अब' वाले हो? शक्ति सेना बहुत बड़ी सेना है। 'कब' वाली हो -ाा 'अब' वाली हो? पाण्डव क-ाा समझते हो? देखो नाम सबके नोट हैं। अभी नाम नहीं सुनाते हैं आखिर वो सम-ा भी आ जा-ोगा जो नाम सुना-ोंगे। समझा!

सबसे ज-ाादा संख-ाा किस ज़ोन की आई है? देखेंगे पंजाब-इन्दौर क-ाा कमाल दिखाते हैं? टीचर्स भी ज-ाादा आती हैं, संख-ाा ज-ाादा तो टीचर्स भी ज़-ाादा होती। पंजाब वाले नम्बरवन लेंगे -ाा सेकण्ड? इन्दौर भी नम्बरवन लेंगे? और कर्नाटक क-ाा करेंगे? कौन-सा नाटक दिखा-ोंगे? कर - नाटक, तो हीरो नाटक दिखाना, ऐसा-वैसा नहीं दिखाना। और महाराष्ट्र तो महान् ही बनेंगे ना? और -ू.पी. को क-ाा कहते हैं? -ू.पी.में नदि-ाां हैं अर्थात् -ू.पी.पतित को पावन करने वाली है। पावन बनने-बनाने में नम्बरवन। तो -ू.पी. वाले भी नम्बरवन बनेंगे। इस सम-ा तो कोई भी नम्बर टू नहीं कहेंगे। राजस्थान तो है ही लक्की, जो राजस्थान में ही चरित्र भूमि है। हेड क्वार्टर राजस्थान में है ना। तो जहाँ हेड क्वार्टर है वो क-ाा बनेगा? हेड बनेगा ना! सभी खुशी से कह रहे हैं नम्बरवन लेकिन वहाँ जाकर ऐसे नहीं कहना कि क-ाा करें.. कर नहीं सकते... चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है... ऐसी भाषा सोचना भी नहीं। अच्छा, डबल विदेशी भी सेवा में रेस अच्छी कर रहे हैं और रेस में नम्बरवन आना है ना। देश वालों को हिम्मत दिलाने में विदेश अच्छा निमित्त बना है। इस हिम्मत दिलाने के कारण एक्स्ट्रा मदद भी मिलती है। समझा! इसी को स्मृति में रख सहज बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। अच्छा!

चारों ओर की सर्व विशेष आत्माओं को, सदा साकार ब्रह्मा बाप के श्रेष्ठ कर्मों को फ़ालो करने वाले कर्म-ोगी आत्माओं को, सदा विशेषता को नेचरल और नेचर बनाने वाली कोटों में कोई आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा विशेष

जन्म, धर्म और कर्म के स्मृति स्वरूप आत्माओं को बापदादा का विशेषता सम्पन्न -ााद-प्-ाार और नमस्ते।

दादि-ाों से मुलाकात

आप ब्राह्मण जितने सम्पन्न बनते जा-ोंगे उतना भविष्-ा में प्रकृति भी प्रगति को प्राप्त करेगी क्-ोंकि प्रकृति सम-ा प्रति सम-ा अपना सिग्नल दिखा रही है। तो जितनी प्रकृति की हलचल उतनी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। कितनी आत्मा-ों सम-ा प्रति सम-ा दुःख की लहर में आती हैं। तो ऐसे दुःखी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो। तो रहम पड़ता है ना। जब समाचार सुनते हो तो क्-ाा दिल में आता है? नथिंग न्-ाू–अपनी अचल स्थिति के लि-ो तो ठीक है लेकिन प्रकृति की हलचल से जब आत्मा-ों चिल्लाती हैं तो किसको चिल्लाती हैं? तो जब मर्सी, रहम मांगते हैं तो आप लोगों को उनके रहम की पुकार पहुँचती तो है ना! -ो छोटी-छोटी आपदा-ों और तड़पती हैं। ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दुःख की दुनि-ाा सम्पन्न हो जा-ो। तो रहम पड़ता है -ाा नहीं? रहम पड़ता है तो फिर क्-ाा करते हो? फिर भी ईश्वरी-ा परिवार के हैं ना। तो परिवार का कोई भी दुःख, सुख में परिवर्तन करने का संकल्प तो आता है ना। कोई परिवार में बीमार भी हो तो क्-ाा संकल्प होता है? जल्दी ठीक हो जा-ो। तो चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एकधक से परिवर्तन होना, फ़र्क तो है ना। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फ़र्क है। महाविनाश अर्थात् महान् परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी। तो जो परेशान हैं वो तो समझते हैं कि प्रत्-ाक्षता का पर्दा खुल जा-ो, लेकिन स्टेज पर आने वाले हीरो एक्टर सम्पन्न तै-ाार होने चाहि-ो ना, तब तो पर्दा खुलेगा कि आधे में खुल जा-ोगा? परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना। आप भी कभी कैसे, कभी कैसे होते हो तो प्रकृति भी कभी बहुत तीव्र गति से का-र्ा करती, कभी ठण्डी हो जाती। तो अभी क्-ाा करना है? रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। पूज्-ा स्वरूप, मर्सीफुल का धारण करो। ठीक है ना। अभी -ो लहर फैलाओ। हर संकल्प में मर्सीफुल। संकल्प में होंगे तो वाणी और कर्म स्वतः ही हो जा-ोंगे। सब चिल्लाते भी क्-ाा हैं? मर्सी-मर्सी। अच्छा!

अव-ाक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

मा-ा की छा-ा से बचने का साधन है-बापदादा की छत्रछा-ा

सदा अपने को बापदादा की छत्रछा-ा के नीचे रहने वाली सदा सेफ़ आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा छत्रछा-ा है -ा कभी बाहर निकल जाते हो? -ा है बाप की छत्रछा-ा -ा है मा-ा की छा-ा। तो मा-ा की छा-ा से बचने का साधन है छत्रछा-ा। तो छत्रछा-ा में रहने वाले कितने खुश रहेंगे। क-ोंकि बेफ़िक्र बादशाह हो ग-े ना। फ़िक्र है तो खुशी गुम होती है। कभी भी देखो खुशी गुम होती है तो कारण क-ा होता है? कोई न कोई चिन्ता, फ़िक्र, बोझ खुशी को गुम कर देता है। और खुशी गुम हुई, कमज़ोर हुए तो मा-ा की छा-ा का प्रभाव पड़ ही जाता है। कमज़ोरी मा-ा का आह्वान करती है। जैसे शारीरिक कमज़ोरी बीमारि-ों का आह्वान करती है तो आत्मिक कमज़ोरी मा-ा का आह्वान करती है। फिर उस छा-ा से निकलने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। अगर मा-ा की छा-ा स्वप्न में भी पड़ गई तो स्वप्न भी परेशान करेगा। फिर ब्राह्मण से क्षत्रि-ा बन जाते हैं तो -ुद्ध करनी पड़ती है। क्षत्रि-ा जीवन मेहनत का है और ब्राह्मण जीवन खुशी का है। तो क-ा पसन्द है? कभी-कभी -ुद्ध करनी पड़ती है? -ुद्ध करना अच्छा लगता है? छोटे से भी व-ार्थ संकल्प की छा-ा कितनी मेहनत कराती है इसलिए सदा बाप के -ाद की छत्रछा-ा में रहो। -ाद ही छत्रछा-ा है। तो सदाकाल के लिए छत्रछा-ा में रहना आता है? कभी-कभी के लि-े नहीं, सदा। अविनाशी बाप है ना। तो वर्सा भी सदा का लेना है। सदा खुश रहने वाले। छत्रछा-ा अर्थात् खुश रहना। बेफ़िक्र होंगे ना। सब फ़िक्र बाप को दे दि-ा कि एक-दो सम्भाल कर रखा है? क-ा करें..., कैसे करें.., -े शब्द फ़िक्र के हैं। बेफ़िक्र के बोल सदा विज-ा के होते हैं। 'क-ा', 'कैसे' के नहीं होते। तो सदा -े -ाद रखो कि हम सभी बाप की छत्रछा-ा में रहने वाले हैं। चक्कर लगाने वाले नहीं। संकल्प में भी चक्कर में आ-े तो चक्कर में आने वाले चकनाचूर हो जा-ेंगे। आप तो अमर हो ना। अमर हो ग-े—-े स्मृति सदा ही स्व-ं भी बेफ़िक्र और दूसरों को भी बेफ़िक्र बनाती रहेगी। सदा खुशी में -े गीत गाते रहेंगे—पाना था वो पा लि-ा। बच्चा बनना माना पाना। बच्चा बने अर्थात् पा लि-ा। अच्छा!

बनारस वाले क-ाा कमाल कर रहे हैं? बनारस में तो बहुत बड़े-बड़े माइक हैं। मण्डलेश्वर बहुत हैं ना। तो कोई महामण्डलेश्वर नज़दीक आ रहा है? आपके बदले वो आपकी विशेषता वर्णन करे। अभी तो -हाँ तक आ-ो हैं कि इन्हों का का-िर्ा भी अच्छा है लेकिन '-ही अच्छा है' -ह नहीं कहते। -ह भी हैं। -ही हैं, तब आवाज़ बुलन्द होगा। जैसे अभी कहा ना २४ अवतार में २५ -ो भी गिन लो। तो -ो क-ाा हुआ? -ो भी हैं -ाा -ही हैं? '-ही हैं,'-ही हैं कहें तो इसको कहा जाता है माइक बन आवाज़ फैलाना। तो कोई भी अथॉरिटी वाला, अगर अथॉरिटी से बोलता है तो माइक का काम करता है। तो देखेंगे इसमें नम्बर कौन लेता है? चारों ओर -ो गीत गाने लगें–-ही हैं वो -ही हैं। -ह तो होना ही है ना। निश्चित है। सिर्फ निमित्त बन रिपीट करना है। अच्छा, राजस्थान के भी जगह-जगह से आ-ो हैं। अभी राजस्थान में और घेराव डालो। अभी राजस्थान में बहुत स्थान खाली हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. २

अधीनता को समाप्त करने के लिए अधिकार के रूहानी नशे में रहो

अपने को सदा बाप के वर्से के अधिकारी स्वराज्-ा अधिकारी और साथ-साथ विश्व के राज्-ा अधिकारी अनुभव करते हो? क-ाोंकि बाप का वर्सा ही है स्वराज्-ा और विश्व का राज्-ा। तो बाप के वर्से के अधिकारी अर्थात् स्वराज्-ा और विश्व के राज्-ा अधिकारी। -ह विश्व आपके हस्तों पर आ-ोगा। अभी तो अनेकों के हाथ में है ना। इसलिए विश्व भी हलचल में है। कभी -हाँ लुढ़कता है, कभी वहाँ लुढ़कता है। जब आपके हाथ में आ जा-ोगा तो हलचल खत्म, एकरस रहेगा। -ाद आता है विश्व पर कितने बार राज्-ा कि-ाा है! अनेक बार कि-ाा है -ह अनुभव होता है? बुद्धि के कैमरा में अपने राज्-ा का चित्र स्पष्ट आता है? -ाा बाप कहता है तो ज़रूर होगा। ऐसा ही स्पष्ट है जैसे वर्तमान स्पष्ट है। क-ाोंकि कल की ही तो बात है। कल था, कल आने वाला है। आज स्वराज्-ा कल विश्व का राज्-ा। आज कल की बात है ना। तो अधिकारी आत्मा सदा रूहानी नशे में रहती है और नशा पुरानी दुनि-ाा सहज भुला देता है। स्थूल नशा

सब कुछ भुला देता है ना। वह है अल्पकाल का और -ाह है सदाकाल का। जब अधिकार का नशा रहता है तो नई दुनि-ाा के आगे -ाह पुरानी दुनि-ाा क-ाा लगती है? कुछ भी नहीं। पुरानी दुनि-ाा को भूलना मुश्किल नहीं लगता है। अधिकारी कभी अधीन नहीं होता। कोई भी बात के अधीन नहीं। जहाँ अधिकार है वहाँ अधीनता नहीं है और जहाँ अधीनता है वहाँ अधिकार नहीं है। अधिकार भूलता है तब अधीन होते। तो कोई भी वस्तु के, व-ाक्ति के, संस्कार के अधीन नहीं होना।

माताओं को थोड़ा थोड़ा मोह आता है? साल में एक दो बारी आता है? नहीं। जब कोई ज-ाादा बीमार होता है तो मोह आता है? पाण्डवों को क-ाा आता है? क्रोध नहीं आता रोब आता है? बाप मिला सब कुछ मिला। तो -ाह हद की बातें कुछ भी नहीं लगती हैं। छोड़ना नहीं पड़ता लेकिन स्वत: ही छूट जाती हैं। मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

अच्छा, -े वेराइटी ग्रुप है। रंग बिरंगे वेराइटी फूलों का गुलदस्ता अच्छा है। लेकिन इस सम-ा सब कहाँ के हो? इस सम-ा मधुबन निवासी हो -ाा अपने-अपने स्थान -ााद हैं? इस सम-ा सब एक हो। मधुबन निवासी बनने में मज़ा आता है ना? मज़ा आता हैं तो क-ों जाते हो? कहो सेवा के लिए जाते हैं। मधुबन प-ाारा है लेकिन सेवा भी प-ाारी है। तो कहाँ भी रहते -ाह स्मृति में सदा रहे कि सेवा अर्थ हैं। हिसाब किताब के अर्थ नहीं, सेवा अर्थ। ब्राह्मण अर्थात् सेवाधारी। सेवा में मज़ा है ना। घर समझेंगे तो बंधन है और सेवास्थान समझेंगे तो खुशी है। जा भी रहे हैं तो सेवाअर्थ जा रहे हैं। हिसाब-किताब अर्थ नहीं जा रहे हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

होलीहंस बनने का साधन – मन-बुद्धि की स्वच्छता और ज्ञान रत्नों की धारणा

सदा होली हंस बन ग-े – ऐसा अनुभव करते हो? होली हंस हो ना! तो हंस क-ाा करता है? हंस का काम क-ाा होता है? (मोती चुगना) और दूसरा? दूध और पानी को अलग करना। एक है ज्ञान रत्न चुगना अर्थात् धारण करना और दूसरी विशेषता है निर्ण-ा शक्ति की विशेषता। दूध और पानी

को अलग करना अर्थात् निर्ण-ा शक्ति की विशेषता। जिसमें निर्ण-ा शक्ति होगी वो कभी भी दूध की बजा-ा पानी नहीं धारण करेगा। दूध की वैल्-ाु पानी से ज्-ाादा है। तो दूध और पानी का अर्थ है व्-ार्थ और समर्थ का निर्ण-ा करना। व्-ार्थ को पानी समान कहते हैं और समर्थ को दूध समान कहते हैं। तो ऐसे होली हंस हो? निर्ण-ा शक्ति अच्छी है? कि कभी पानी को दूध समझ लेते, कभी दूध को पानी समझ लेते? व्-ार्थ को अच्छा समझ लें और समर्थ में बोर हो जा-ों। नहीं। तो होली हंस अर्थात् सदा स्वच्छ। हंस सदा स्वच्छ दिखाते हैं। स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तो अभी स्वच्छ बन ग-ो ना। मैलापन निकल ग-ाा -ाा अभी भी थोड़ा-थोड़ा है? थोड़ा-थोड़ा रह तो नहीं ग-ाा? कभी मैले के संग का रंग तो नहीं लग जाता? कभी-कभी मैले का असर होता है? तो स्वच्छता श्रेष्ठ है ना। मैला भी रखो और स्वच्छ भी रखो तो क्-ाा पसन्द करेंगे? स्वच्छ पसन्द करेंगे -ाा मैला भी पसन्द करेंगे? तो सदा मन-बुद्धि स्वच्छ अर्थात् पवित्र। व्-ार्थ की अपवित्रता भी नहीं। अगर व्-ार्थ भी है तो सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं कहेंगे। तो व्-ार्थ को समाप्त करना अर्थात् होलीहंस बनना। हर सम-ा बुद्धि में ज्ञान रत्न चलते रहें, मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्-ार्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना। व्-ार्थ है पत्थर। कभी भी अगर व्-ार्थ आता है तो दु:ख की लहर आती है ना। परेशान तो होते हो ना कि -ो क्-ाों आ-ाा? तो पत्थर दु:ख देता है और रत्न खुशी देता है। अगर किसी के हाथ में रत्न आ जा-ो तो परेशान होगा -ाा खुश होगा? खुश होगा ना। अगर कोई पत्थर फेंक दे तो दु:ख होगा। तो बुद्धि द्वारा भी पत्थर ग्रहण नहीं करना। सदा ज्ञान रत्न ग्रहण करना। एक-एक रत्न की अनगिनत वैल्-ाु है! आपके पास कितने रत्न हैं? अनगिनत हैं ना! रत्नों से भरपूर हैं, खाली तो नहीं हैं? कभी भी बुद्धि को खाली नहीं रखो। कोई न कोई होम वर्क अपने आपको देते रहो। बुद्धि को होम वर्क में बिज़ी रखो। रोज़ बाप होम वर्क देता है ना। -ो विशेषता-ों, वरदान, विशेष धारणा-ों क्-ाा हैं? -ो होम वर्क है। होम वर्क करते हो -ाा क्लास में सुना फिर खत्म? होम वर्क किसलि-ो मिलता है? बिज़ी रहने के लि-ो। तो माता-ों होम वर्क करती हैं? गॉडली स्टूडेन्ट हो ना कि घर में जाती हो तो अपने को माता समझती हो? स्टूडेन्ट का काम क्-ाा होता है? स्टडी। कितना सहज करके देते हैं। तो किसमें बिज़ी रहते हो? पाण्डव बिज़ी रहते हो? बिज़ी रहना अर्थात् सेफ़ रहना।

और कितना सहज होम वर्क है! जो सुना वो करना है, बस। कितनी खुशी है कि होमवर्क देने वाला कौन! और कहाँ से आते हैं! कितना दूर से आते हैं! ऊंचे से ऊंचा भगवान् शिक्षक बन करके आते हैं–कितने नशे की बात है! सारे कल्प में ऐसा शिक्षक नहीं मिलेगा। तो होम वर्क अच्छी तरह से करना चाहि-ो ना। अच्छा!

ग्रुप नं. ४

कुसंग और व्-ार्थ संग से बचने के लिए सदा ईश्वरी-ा संग में रहो

सभी अपने को ज्ञान बल और -ोग बल दोनों में सदा आगे बढ़ने वाले अनुभव करते हो? दुनि-ाा में और अनेक प्रकार के बल हैं–साइन्स का भी बल है, राज्-ा का भी बल है, भक्ति का भी बल है लेकिन आपमें क्-ाा बल है? ज्ञान बल और -ोग बल। -ो सबसे श्रेष्ठ बल है। तो -ोग बल में जो बल होता है, शक्ति होती है वो किसलि-ो होती है? विज-ा प्राप्त करने के लि-ो। जैसे साइन्स का बल है तो साइन्स का बल अन्धकार के ऊपर विज-ा प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे -ोगबल सदा के लि-ो मा-ाा पर विज-ाी बनाता है। तो मा-ाा जीत बनने का बल है? कि कभी हार होती, कभी जीत? सदा के विज-ाी। कभी-कभी के विज-ाी को विज-ाी नहीं कहा जा-ोगा। क्-ाोंकि बाप द्वारा -ो ज्ञान बल और -ोग बल इतना श्रेष्ठ मिला है जो मा-ाा की शक्ति उसके आगे कुछ नहीं है। तो -ोग बल बड़ा है -ाा मा-ाा कभी-कभी खेल करने आती है? मा-ाा जीत आत्मा-ों कभी स्वप्न में भी हार नहीं खा सकतीं। स्वप्न में भी कमज़ोरी नहीं आ सकती। स्वप्न भी शक्तिशाली। ऐसे बहादुर हो -ाा कभी-कभी की छुट्टी दे रखी है? सदा के विज-ाी हैं। आपके मस्तक पर विज-ा का तिलक लगा हुआ है ना। नशा है कि – विज-ा हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है? तो जन्म-सिद्ध अधिकार कभी खो नहीं सकता। सदा -ो स्मृति में रहे कि विज-ाी हैं और सदा विज-ाी रहेंगे। -ाा सोचते हो–पता नहीं, रहेंगे -ाा नहीं रहेंगे... कभी -ो संकल्प आता है? पता नहीं आगे क्-ाा होगा.... पता नहीं मा-ाा आ जा-ो तो... कभी संग का रंग लग जा-ो तो.... ऐसे तो तो आता है! अगर ऐसा कोई संग मिल जा-ो तो क्-ाा करेंगे? उसको भी कुसंग से सत के संग में ला-ोंगे? क्-ाोंकि जब तक फ़ाइनल रिज़ल्ट निकले तब

तक पेपर तो आ-ेगा ही। पेपर का काम है आना और आपका काम पास विद् ऑनर होना। कैसा भी संग खराब हो लेकिन आपका श्रेष्ठ संग उसके आगे कितना गुणा शक्तिशाली है! ईश्वरी-ा संग के आगे और सब संग कुछ भी नहीं है। सब कमज़ोर हैं। खुद कमज़ोर बनते हो तब उल्टे संग का वार होता है। तो मा-ाा जीत अर्थात् सिवाए एक बाप के और किसी भी संग के रंग से प्रभावित होने वाले नहीं। इसीलि-े सतसंग गा-ाा जाता है। सतसंग की महिमा देखो कितनी है! आप तो सतसंग अर्थात सत बाप के संग में रहने वाले हो। ऐसे है ना। एक बाप (परमात्मा) का संग है सतसंग और दूसरे सब हैं कुसंग -ाा व्-ार्थ संग। कई कुसंग से बच जाते हैं, लेकिन व्-ार्थ संग से प्रभावित हो जाते हैं। क्-ाोंकि व्-ार्थ बातें रमणीक होती हैं। जैसे आजकल कथा-ें कितनी रमणीक सुनाते हैं। तो व्-ार्थ बातें, व्-ार्थ संग बाहर से आकर्षित करने वाला है। इसलिए बाप की शिक्षा है–न व्-ार्थ सुनो, न व्-ार्थ बोलो, न व्-ार्थ करो, न व्-ार्थ देखो, न व्-ार्थ सोचो। बुरे की तो बात ही खत्म हो गई। लेकिन व्-ार्थ में कभी-कभी फंस जाते हैं। बाहर का शो बहुत अच्छा होता है ना। तो सदा के विज-ाी आत्मा-ें–मा-ााजीत जगतजीत। शक्ति-ाां वा पाण्डव ऐसे मा-ााजीत हो? क्-ाोंकि मा-ाा भी न-े-न-े रूप से आती है, पुराने रूप से नहीं आती। पुराने को तो जान ग-े हो ना, तो न-े-न-े रूपों से आ-ेगी। इसमें निर्ण-ा करने की शक्ति चाहिए कि -ाह मा-ाा है -ाा परमात्म ज्ञान है। तो कितने टाइम में परख सकते हो? -ाा थोड़ा चक्कर खाकर पीछे परखेंगे? अगर थोड़ा भी चक्कर में आ ग-े तो सम-ा व्-ार्थ चला जा-ेगा और नम्बर पीछे हो जा-ेगा। फिर मेहनत करके आगे बढ़ सकते हो लेकिन फिर भी दाग़ तो लग ग-ाा ना। कितना भी मिटाओ लेकिन मिटाने का भी मालूम पड़ता है। इसलिए सदा के विज-ाी बनो। अधिकार है ना। तो अधिकार कोई भी छोड़ता नहीं।

सभी को विशेष -ाह खुशी रहती है ना कि बाप मिला सब-कुछ मिला? मिला है -ाा मिलना है? अगर कोई आ करके आपको कहे कि नहीं और भी कुछ रहा हुआ है, आओ हम आपको दें तो टेस्ट तो करेंगे ना, थोड़ी टेस्ट करने में हर्जा है क्-ाा? एक बल, एक भरोसा कि थोड़ा-थोड़ा दूसरा भी है? और बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुना-ें तो सुनेंगे? सुन करके उसको बदलने की कोशिश करेंगे? क्-ाा करेंगे? सुनना भी नहीं है, सुना तो चक्कर में आ जा-ेंगे। जो सुनना

था वो सुन लि-ा। इसलि-े कहते हैं जो पाना था, जो सुनना था, जो करना था वो कर लि-ा। इतना भरपूर रहो। ज़रा भी खालीपन होगा तो और कुछ भर जा-ेगा। भरपूर में और कुछ भर नहीं सकता। तो कोई के भी संग के चक्कर में आने वाले नहीं। ऐसे पक्के रहने में ही मज़ा है। अगर कच्चे रहेंगे तो कभी कोई -हाँ से आ-ेगा, कोई वहाँ से आ-ेगा। पक्के को कोई कुछ कर नहीं सकता। न प्रकृति हिला सकती, न मा-ा हिला सकती। न किसी का संग हिला सकता। कैसा भी वा-ुमण्डल हो लेकिन वा-ुमण्डल को बदलने वाले, वा-ुमण्डल के वश होने वाले नहीं। इतनी हिम्म्त है ना! तो जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की पद्मगुणा मदद है ही। ऐसे अनुभव करते हो ना। एक कदम आपका और पद्म कदम बाप का। तो सभी हिम्मत वाले हो -ा थोड़ा हिलने वाले भी हो? दिल से आवाज़ निकले कि हम नहीं हिम्मत रखेंगे तो और कौन रखेगा? अच्छा!

ग्रुप नं. ५

सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता बनो – न दु:ख दो न दु:ख लो

सभी अपने को तख्त नशीन आत्मा-ें अनुभव करते हो? इस सम-ा भी तख्तनशीन हो कि भविष्-ा में बनना है? अभी कौन-सा तख्त है? एक अकाल तख्त, दूसरा दिल तख्त। तो दोनों तख्त स्मृति में रहते हैं? तख्तनशीन आत्मा अर्थात् राज्-ा अधिकारी आत्मा। तख्त पर वही बैठता जिसका राज्-ा होता है। अगर राज्-ा नहीं तो तख्त भी नहीं। तो जब अकाल तख्तनशीन हैं तो भी स्वराज्-ा अधिकारी हैं और बाप के दिल तख्तनशीन हैं तो भी बाप के वर्से के अधिकारी। जिसमें राज्-ा-भाग्-ा सब आ जाता है। तो तख्तनशीन अर्थात् राज्-ा अधिकारी। राज्-ा अधिकारी हो कि कभी-कभी तख्त से नीचे उतर आते हो? सदा तख्त नशीन हो कि कभी-कभी के हो? कभी तख्त पर बैठकर थक जा-े तो नीचे आ जा-ें! नहीं। दिल तख्त इतना बड़ा है जो सब-कुछ करते भी तख्तनशीन। कर्म-ोगी अर्थात् दोनों तख्तनशीन। अकाल तख्त पर बैठ कर्म करते हो तो वो कर्म भी कितने श्रेष्ठ होते हैं! क्-ोंकि सर्व कर्मेन्द्रि-ाां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं। अगर कोई तख्त पर ठीक न हो तो लॉ और ऑर्डर चल नहीं सकता। अभी देखो प्रजा

का प्रजा पर राज्-ा है तो लॉ और ऑर्डर चल सकता है? एक लॉ पास करेगा तो दूसरा लॉ ब्रेक करेगा। तो तख्तनशीन आत्मा अर्थात् सदा -ाथार्थ कर्म और -ाथार्थ कर्म का प्रत्-ाक्षफल खाने वाली। श्रेष्ठ कर्म का प्रत्-ाक्षफल भी मिलता है और भविष्-ा भी जमा होता है–डबल है। तो प्रत्-ाक्षफल क्-ाा मिला है? खुशी मिलती है, शक्ति मिलती है। कोई भी श्रेष्ठ कर्म करते हो तो सबसे पहले खुशी होती है। और दिल खुश तो जहान खुश। तो दिल सदा खुश रहता है -ाा कभी संकल्प मात्र भी दुःख की लहर आ जाती है? कभी भी नहीं आती -ाा कभी-कभी चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है? दुःखधाम से किनारा कर लि-ाा। कि-ाा है -ाा एक पांव इधर है, एक पांव उधर है? एक दुःखधाम में, एक सुखधाम में–ऐसे तो नहीं? आप कलि-ुग निवासी हो -ाा संगम निवासी हो कि कभी-कभी कलि-ुग में भी चले जाते हो? संगम-ुगी ब्राह्मण अर्थात् दुःख का नाम-निशान नहीं। क्-ाोंकि सुखदाता के बच्चे हो। तो सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता होंगे। जो मास्टर सुखदाता है वो स्व-ां दुःख में कैसे आ सकता है। तो बुद्धि से दुःखधाम का किनारा कर लि-ाा। स्व-ां तो सुख स्वरूप हैं ही लेकिन सुखदाता के बच्चे औरों को भी सुख देने वाले मास्टर सुखदाता हैं। तो दूसरों को सुख देते हो कि सिर्फ स्व-ां सुखी रहते हो? दाता हो ना। जो बाप का का-र्ा वो बच्चों का का-र्ा है। तो बाप हर आत्मा को सदा सुख देते हैं ना। अनुभव है ना। तो फ़ालो फ़ादर करो। ऐसे नहीं कोई दुःख देता है तो आप भी दुःख देंगे। नहीं। अच्छा, कोई दुःख दे रहा है तो आप क्-ाा करेंगे? उसे लेंगे -ाा नहीं? आपका स्लोगन ही है 'ना दुःख दो, ना दुःख लो।' लेना भी नहीं है। अगर लेंगे तो सुख के साथ दुःख भी मिक्स हो ग-ाा ना। तो लेना भी नहीं है। कोई कितना भी कुछ हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप सदा अचल रहो। ज़रा भी कोई हिला नहीं सकता।

अच्छा, सभी अन्तर्मुखी सदा सुखी हो? पाण्डव क्-ाा समझते हैं? अन्तर्मुखी हैं -ाा थोड़ा-थोड़ा बाहरमुखता भी है? कोई बाहर की आकर्षण आकर्षित तो नहीं करती? कभी मनमत, कभी परमत आकर्षित तो नहीं करती? -ाा कभी-कभी थोड़ा मज़ा चख लेते हो? फिर जब धोखा खाते हैं तो होश में आ जा-ों। नहीं। हैं ही सदा सुखी रहने वाले, सुखदाता के बच्चे मास्टर सुखदाता। बाहरमुखता से मुक्त हो ग-ो। अच्छा!